तुलसी उद्यान, अयोध्या

उत्तर प्रदेश

अद्भुत विरासत–अनूठे अनुभव

उत्तर प्रदेश पर्यटन

upstdc@up-tourism.com

www.uptourism.gov.in

uptourismgov

UttarPradeshTourism

Helpline: 1860 180 1364

पर्यटन निदेशालय, उत्तर प्रदेश

पर्यटन भवन, सी-13, विपिन ,खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ - 226 010
दूरभाष : 0522-2307037, 2307028,

Design: artgraphics Advertising

अतुल्य भारत!

अद्भुत उत्तर प्रदेश!

उत्तर प्रदेश

विरासत–अनूठे अनुभव

उत्तर प्रदेश पर्यटन

आस्था की पावन नगरी...

अयोध्या

तुलसी उद्यान, अयोध्या

उत्तर प्रदेश
अद्भुत विरासत-अनूठे अनुभव
उत्तर प्रदेश पर्यटन

पर्यटन निदेशालय, उत्तर प्रदेश
पर्यटन भवन, सी-13, विपिन ,खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ - 226 010
दूरभाष : 0522-2307037, 2307028, ई-मेलः upstdc@up-tourism.com

www.uptourism.gov.in uptourismgov UttarPradeshTourism Helpline: 1860 180 1364

Design: artgraphics Advertising

अतुल्य भारत!

अद्भुत उत्तर प्रदेश!

आस्था की पावन नगरी...

अयोध्या

भित्ति चित्र, टेराकोटा
अयोध्या शोध संस्थान

भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली अयोध्या प्राचीनकाल से ही धर्म और संस्कृति की परम-पावन नगरी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात रही है।

अयोध्या के माहात्म्य व प्रशस्ति-वर्णन से इस नगरी के महत्व और लोकप्रियता का स्वयं ही अनुभव हो जाता है। अर्थववेद में इसे देव-निर्मित आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली स्वर्गिक नगरी के रूप में रेखांकित किया गया है :-

अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

महर्षि वाल्मीकि-कृत रामायण अयोध्या का मानवेन्द्र मनु द्वारा निर्मित लोक-विख्यात नगरी के रूप में उल्लेख करती है :-

कोसलो नाम मुदितः, स्फीतो जनपदो महान्। निविष्टः सरयू तीरे, प्रभूत धन धान्यवान्।।
अयोध्या नाम नगरी, तत्रासील्लोक विश्रुता। मनुना मानवेन्द्रेण, या पुरी निर्मिता स्वयम्।।

पुराणादि ग्रन्थों में भारत की प्राचीन एवं सात मोक्षदायिनी पुरियों में अयोध्या का अग्रगण्य नामोल्लेख हुआ है :-

अयोध्या मथुरा माया, काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव, सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

मान्यतानुसार प्राचीन अयोध्या का निर्माण महर्षि वशिष्ठ की देख-रेख में विश्वकर्मा जी की सहायता से मनु द्वारा किया गया था। प्राचीन उत्तर कोसल प्रान्त की राजधानी रही अयोध्या को त्रेतायुगीन इक्ष्वाकु, सगर, दिलीप, रघु, अज, दशरथ आदि जैसे प्रतापी सोमवंशी राजाओं के संरक्षण का गौरव प्राप्त हुआ। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम के जीवन-दर्शन से गौरवान्वित इस पावन नगरी के सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र और सुरसरि गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने वाले राजा भगीरथ सिरमौर रहे हैं।

जैन धर्म के प्रणेता श्री आदिनाथ सहित पाँच तीर्थंकर इसी नगरी में जन्मे थे। चीनी यात्रीद्वय फाह्यान व ह्वेनसांग के यात्रा-वृत्तान्तों में भी अयोध्या नगरी का उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रन्थों-पुराणों, रामायण, श्री रामचरित मानस एवं अगणित अन्य अमर कृतियों में अयोध्या, कोसलपुरी, अवधपुरी, साकेत आदि नामों से वर्णित यह नगरी अपने विशिष्ट माहात्म्य के कारण देश-विदेश के श्रद्धालुजनों में आस्था व प्रेरणा के पावन केन्द्र के रूप में समादृत है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने तभी तो अवधपुरी का वर्णन करते हुए कहा है :-

बंदऊँ अवध पुरी अति पावनि, सरजूसरि कलि कलुष नसावनि।

कनक भवन

अयोध्या के प्रमुख दर्शनीय स्थान

(दूरियाँ अयोध्या रेलवे स्टेशन से)

रामकोट (लगभग 2 किमी0)

यह नगर की पश्चिमी दिशा में स्थित है, जहाँ अनेक मन्दिर एवं दर्शनीय स्थान अवस्थित हैं। चैत्रमास की रामनवमी (मार्च-अप्रैल) को भगवान् राम के जन्मोत्सव के पावन पर्व पर यहाँ देश-विदेश के श्रद्धालुओं का बड़ी संख्या में आवागमन होता है।

दर्शनावधि :

ग्रीष्मकाल- प्रातः 6.30 से 10.30 बजे तक तथा अपराह्न 3.00 से सायं 6.00 बजे तक

शीतकाल- प्रातः 7.30 से 10.30 बजे तक तथा अपराह्न 2.00 से सायं 5.00 बजे तक

कनक भवन

कनक भवन (1.5 किमी0)

कनक भवन के विषय में एक रोचक कथा प्रचलित है कि जब जानकी जी विवाह के पश्चात् अयोध्या आईं, तो महारानी कैकेयी ने कनक-निर्मित अपना महल उनको प्रथम भेंट स्वरूप प्रदान किया था।

महाराजा विक्रमादित्य ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। बाद में टीकमगढ़ रियासत की महारानी वृषभानु कुंवारी ने एक सुन्दर विशाल भवन इसी स्थान पर पुनः निर्मित करवाया, जो आज भी विद्यमान है। इसी भवन में स्थित मन्दिर में श्री राम और किशोरी जी की दिव्य प्रतिमाएं स्थापित हैं।

दर्शनावधि : प्रातः 8.00 से 10.30 बजे तक तथा सायं 4.50 से 8.30 बजे तक

नागेश्वरनाथ मन्दिर

(लगभग 4 किमी0 उत्तर-पूर्व एवं राम की पैड़ी के समीप)

नागेश्वरनाथ जी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। श्री रामचन्द्र जी के पुत्र महाराजा कुश द्वारा स्थापित इस मन्दिर की स्थापना के संबंध में कथा प्रचलित है कि एक दिन जब महाराजा कुश सरयू नदी में स्नान कर रहे थे, तो उनके एक हाथ का कंगन जल में गिर गया, जिसे नाग-कन्या उठा ले गयी। बहुत खोजने के बाद भी जब महाराज कंगन प्राप्त नहीं कर सके, तब कुपित होकर उन्होंने जल को सुखा देने की इच्छा से अग्निशर का संधान किया, जिसके परिणामस्वरूप जल-जन्तु व्याकुल होने लगे। तब नागराज ने स्वयं वह कंगन लाकर महाराजा कुश को सादर भेंट किया तथा उनसे अपनी पुत्री से विवाह का अनुरोध किया। महाराजा कुश ने नाग-कन्या से विवाह करके उस घटना की स्मृति में उस स्थान पर नागेश्वरनाथ मंदिर की स्थापना की। उसी स्थान पर आज एक विशाल शिव मंदिर स्थित है। प्रत्येक त्रयोदशी एवं शिवरात्रि महापर्व पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु तीर्थ यात्री सरयू-स्नान करके इस मन्दिर में जल चढ़ाने आते हैं।

दर्शनावधि :

ग्रीष्मकाल- प्रातः 5.00 से 8.30 बजे तक तथा
सायं 4.00 से रात्रि 8.00 बजे तक।

शीतकाल- प्रातः 6.00 से 11.00 बजे तक तथा
सायं 4.00 से रात्रि 7.00 बजे तक।

हनुमानगढ़ी

(लगभग 1 किमी0 उत्तर-पूर्व)।

रामकोट के पश्चिम द्वार पर महाराजा विक्रमादित्य ने हनुमान जी का एक मन्दिर बनवाया था, जो कालान्तर में हनुमान टीले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ऊँचे स्थान पर स्थित इस मन्दिर तक छिहत्तर सीढ़ियाँ चढ़कर पहुँचा जाता है।

दर्शनावधि : ग्रीष्मकाल - प्रातः 4.00 से रात्रि 11.00 बजे तक
शीतकाल - प्रातः 5.00 से रात्रि 10.00 बजे तक

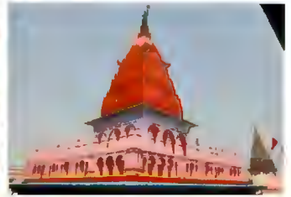

हनुमानगढ़ी मन्दिर के विभिन्न स्वरूप

छोटी देवकाली मन्दिर (2 किमी0)

यह मन्दिर नये घाट के समीप एक गली में स्थित है। छोटी देवकाली जी अवध की ग्राम-देवी मानी जाती हैं। मान्यतानुसार विवाहोपरान्त जब सीता जी अयोध्या आने लगीं, तो अपने साथ अपनी पूज्या देवी गिरिजा जी को भी साथ लायीं। महाराज दशरथ ने उनकी स्थापना सप्तसागर के समीप एक सुन्दर मन्दिर में की। जानकी जी नित्य नियमपूर्वक प्रातः काल परम शक्तिस्वरूपा माँ गिरिजा जी की विधिवत उपासना करती थीं। वर्तमान में यहाँ श्री देवकाली जी की देदीप्यमान भव्य प्रतिमा स्थापित है।

दर्शनावधि- सूर्योदय से सूर्यास्त तक।

मत्तगयन्द (मातगैंड) जी का स्थान

(लगभग 2 किमी0)

मत्तगयन्द जी लंकाधिपति विभीषण के पुत्र थे, उनका स्थान कनक भवन मंदिर के उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। ये रामकोट के उत्तरी फाटक के प्रधान रक्षक थे। प्रतिवर्ष होली के बाद पड़ने वाले प्रथम मंगल के दिन यहाँ विशाल मेला लगता है।

कालेराम जी का मन्दिर

(2.5 किमी0)

नागेश्वरनाथ मन्दिर के समीप सरयू नदी के पावन तट पर स्वर्गद्वार मुहल्ले में कालेराम जी का मन्दिर है। यहाँ विक्रमादित्य कालीन मूर्तियाँ स्थापित हैं। अयोध्या के प्राचीन मन्दिरों में कालेराम जी के मन्दिर का प्रमुख स्थान है।

दर्शनावधि :

ग्रीष्मकाल- प्रातः 4.30 से 11.00 बजे तक तथा
सायं 4.00 से रात्रि 9.00 बजे तक

शीतकाल- प्रातः 5.00 से 11.30 बजे तक तथा
सायं 4.00 से रात्रि 8.00 बजे तक

मणिपर्वत

मणिपर्वत (लगभग 1 किमी0)

विद्याकुण्ड के समीप 65 फीट की ऊँचाई पर स्थित मणिपर्वत के बारे में जनश्रुति है कि हिमालय से संजीवनी बूटी को लेकर लंका जाते हुए पवनसुत हनुमान जी ने संजीवनी बूटी के पर्वत-खण्ड को रखकर यहाँ विश्राम किया था। ऊपर मन्दिर एवं झूला दर्शनीय हैं। श्रावण मास में अयोध्या में सम्पन्न होने वाले प्रसिद्ध झूलनोत्सव का प्रारम्भ यहीं से होता है। उस अवसर पर हजारों की संख्या में भक्तजन भगवान की मनोहारी झाँकी देखने के लिए उपस्थित होते हैं।

दर्शनावधि : सूर्योदय से सूर्यास्त तक।

लक्ष्मण किला

सरयू के पावन तट पर स्थित लक्ष्मण किले का निर्माण मुबारक अली खाँ ने करवाया था। इसे किला मुबारक भी कहा जाता है। रसिक सम्प्रदाय के सन्त स्वामी युगलानन्द पारण जी महाराज, निर्मली कुण्ड पर तप करते थे। उनके स्वर्गवासी होने के उपरान्त कालान्तर में दीवान रीवाँ दीनबन्धु जी ने इस स्थान पर एक विशाल मंदिर बनवाया, जो आज भी विद्यमान है।

क्षीरेश्वरनाथ महादेव मन्दिर (लगभग 1/2 किमी0)

हनुमानगढ़ी चौराहे से फैजाबाद-लखनऊ जाने वाले मार्ग पर क्षीरसागर स्थित है। इसके समीप ही श्री क्षीरेश्वरनाथ महादेव जी का भव्य शिवालय स्थित है। वर्गाकार चबूतरे पर निर्मित, इस मंदिर में एक विशाल शिवलिंग स्थापित है।

कौशलेश सदन (लगभग 1.5 किमी0)

यह मन्दिर कटरा मुहल्ले में स्थित है। अयोध्या स्थित रामानुजी वैष्णवों की तिंगल शाखा के प्रमुख मन्दिरों में यह मन्दिर अद्वितीय है।

लव-कुश मन्दिर (लगभग 1.5 किमी0)

भगवान राम के पुत्रों-लव व कुश के नाम पर निर्मित इस मन्दिर में लव व कुश की मूर्ति के साथ महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा भी स्थापित है। इसके समीप ही अंबरदास जी राम कचेहरी मन्दिर, जगन्नाथ मन्दिर तथा रंगमहल मन्दिर हैं, जो अयोध्या के प्रमुख दक्षिण भारतीय मन्दिरों में गिने जाते हैं।

विजयराघव मन्दिर (लगभग 1.5 किमी0)

यह मन्दिर विभीषण कुण्ड जाने वाले मार्ग पर स्थित है। इसकी स्थापना 1915 ईस्वी में की गयी थी। आचारी सम्प्रदाय के तिंगल शाखा के अयोध्या स्थित मन्दिरों में इसका प्रमुख स्थान है।

अयोध्या

अवधपुरी सोहइ एहि भांती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती।।

– श्री रामचरित मानस

देख लो, साकेत नगरी है यही, स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।

– साकेत महाकाव्य

दन्तधावन कुण्ड

''रानी हो'' अयोध्या

लगभग 2000 वर्ष पूर्व अयोध्या की ''रानी हो'' जल मार्ग द्वारा भारत से कोरिया गई थी जिन्हें कोरियन नाम हू-वांग ऑक के नाम से जाना जाता है। कोरिया जाकर उनका विवाह, करक साम्राज्य के राजा 'किम सूरो' के साथ हुआ था। अयोध्या में "रानी हो" की जन्मस्थली की स्मृति में वर्ष 2000 में निर्मित स्मारक आज कोरियन गणराज्य का धार्मिक स्थल बन चुका है।

रत्नसिंहासन (राजगद्दी)

(लगभग 1.5 किमी0)

यह भवन कनक भवन की दक्षिण दिशा में है। मान्यतानुसार यहाँ भगवान राम का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ था।

दन्तधावन कुण्ड

(लगभग 1.5 किमी0)

श्री वैष्णव के वड़गल शाखा के अन्तर्गत आने वाला यह मन्दिर हनुमानगढ़ी चौराहे से रामघाट तुलसी स्मारक जाने वाले मार्ग पर स्थित है। किंवदन्ती के अनुसार इसी स्थान पर श्री रामचन्द्र जी चारों भाइयों के साथ प्रातः दतुवन करते थे।

वाल्मीकि रामायण भवन

(लगभग 3 किमी0)

इस भवन में सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण को संगमरमर पर अंकित किया गया है।

दर्शनावधि : सूर्योदय से सूर्यास्त तक।

तुलसी स्मारक भवन/अयोध्या शोध संस्थान/राम-कथा-संग्रहालय

(लगभग 1 किमी0)

तुलसी चौरा के समीप उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी की स्मृति में तुलसी स्मारक भवन का निर्माण करवाया गया है। भवन से संचालित अयोध्या शोध संस्थान के तत्त्वावधान में यहाँ प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी को गोस्वामी तुलसीदास जी की जयन्ती विशेष आयोजनपूर्वक मनायी जाती है। यहाँ विशाल ग्रन्थागार, पुस्तकालय-वाचनालय एवं हस्तशिल्प का राम-कथा-विषयक सामग्रियों का संग्रह तथा अनुसंधाताओं के लिए तुलसी-साहित्य पर उत्तम सामग्री भी उपलब्ध है।

विशेष आकर्षण : अनवरत रामलीला एवं कथा-वाचन कार्यक्रम
प्रतिदिन सायं 6.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक।

तुलसी स्मारक भवन

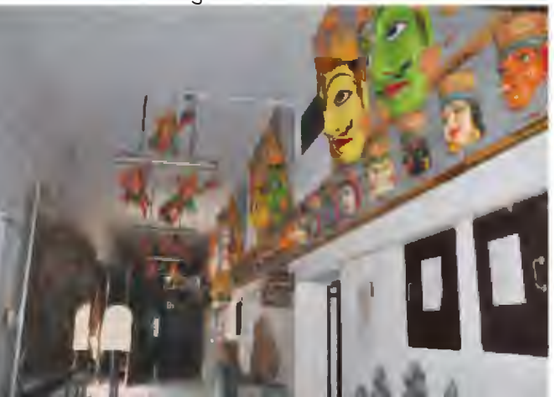

राम-कथा-संग्रहालय

तुलसी स्मारक भवन में स्थित राम-कथा-संग्रहालय में राम-कथा से संबंधित विभिन्न प्रकार की पेंटिंग, हाथी-दाँत के मुखौटे, प्राचीन दर्शनीय वस्तुएं और देश के विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहीत राम-कथा से संबंधित मूल सामग्रियों के चित्र उपलब्ध हैं।

साप्ताहिक अवकाश : सोमवार एवं सार्वजनिक अवकाश दिवस।

सम्पर्क सूत्र : 0578-232982,

ई-मेलः ayodhyaresearch1986@gmail.com

www.ayodhya.co

गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड

(लगभग 3 किमी0)

ब्रह्मकुण्ड घाट के निकट ब्रह्मदेव जी का एक छोटा-सा मन्दिर है, जिसमें ब्रह्मा जी की चतुर्भुजी मूर्ति स्थापित है। मान्यता है कि गुरुनानकदेव जी को चतुरानन ब्रह्मा जी के साक्षात दर्शन यहीं प्राप्त हुए थे। गुरु तेगबहादुर जी एवं गुरु गोविन्द सिंह जी का भी पावन प्रवास अयोध्या नगरी में हुआ था। घाट के पास विशाल गुरुद्वारा स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष सिख तीर्थ यात्री दर्शन के लिए आते हैं।

अयोध्या के जैन मन्दिर

अयोध्या को पाँच जैन तीर्थकरों की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। यहाँ पाँचों तीर्थकरों के मन्दिर हैं-तीर्थकर आदिनाथ मन्दिर (मुरारी टोला, स्वर्गद्वार), तीर्थकर अजितनाथ मन्दिर (सप्तसागर, इटौआ), तीर्थकर अभिनन्दननाथ मन्दिर (सराय के निकट), तीर्थकर सुमन्तनाथ मन्दिर (रामकोट), तीर्थकर अनन्तनाथ मन्दिर, (गोलाघाट)। रायगंज मुहल्ले में ऋषभदेव जी का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर में ऋषभदेव जी की 21 फुट ऊँची संगमरमर की दिगम्बर मूर्ति स्थापित है, जो अयोध्या स्थित जैन मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों में विशालतम है।

गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड

तीर्थकर ऋषभदेव जी मन्दिर

राम की पैड़ी (लगभग 2 किमी0)

अयोध्या-गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सरयू के पुल के निकट नदी के किनारे स्थित राम की पैड़ी अयोध्या का महत्वपूर्ण स्थान है। उद्यान एवं जलाशय यहाँ के आकर्षण हैं।

अयोध्या की प्रमुख परिक्रमाएं

- चौरासी कोसी परिक्रमा-चैत्र शुक्ल रामनवमी को प्रारम्भ
- चौदह कोसी परिक्रमा-कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी पर
- पंचकोसी परिक्रमा-कार्तिक एकादशी को
- अर्न्तगृही परिक्रमा-नित्यप्रति (यह परिक्रमा वशिष्ठ कुण्ड से प्रारम्भ होकर हनुमानगढ़ी से दक्षिण होते हुए श्री वशिष्ठ आश्रम पर समाप्त होती है। अयोध्या के सभी प्रमुख मन्दिर एवं तीर्थ इस परिक्रमा में आ जाते हैं।)

प्रमुख पर्व-उत्सव

- चैत्र रामनवमी (मार्च-अप्रैल)
- श्रावण झूला मेला (जुलाई-अगस्त)
- कार्तिक पूर्णिमा (नवम्बर)
- श्रीराम विवाहोत्सव-रामायण मेला (नवम्बर-दिसम्बर)
- बालार्क तीर्थ (सूर्यकुण्ड) मेला
- भरतकुण्ड मेला
- गुप्तारघाट मेला
- मखभूमि (मखौड़ा) मेला
- सूकरक्षेत्र मेला

बहू बेगम का मक़बरा

समीपवर्ती दर्शनीय स्थान

फैज़ाबाद (8 किमी0)

फैज़ाबाद ऐतिहासिक स्मारकों का महत्वपूर्ण नगर है, इस नगर में जहाँ गुलाब बाड़ी, बहू बेगम मक़बरा, मोती महल जैसे अवध की विशिष्ट स्थापत्य से समृद्ध स्मारक देखने को मिलते हैं, तो वहीं सरयूतटवर्ती गुप्तारघाट (जहाँ लोक-मान्यतानुसार भगवान् श्रीराम ने जल-समाधि ली थी, जिसके कारण यह गुप्तारघाट के नाम से जाना जाता है), सीता-राम मन्दिर, चक्रहरि-गुप्तहरि, नृसिंह एवं बड़ी देवकाली मन्दिर जैसे आस्था के पावन स्थल हैं। कैण्ट क्षेत्र में स्थित सुन्दर मिलेट्री मन्दिर एक अन्य आकर्षण है।

गुलाब बाड़ी

गुप्तारघाट

बालार्क तीर्थ (सूर्य कुण्ड) (लगभग 4 किमी0)

चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग पर अवस्थित, यहाँ राजा दर्शन सिंह ने सूर्यदेव का मन्दिर एवं विशाल सूर्यकुण्ड बनवाया था। प्रतिवर्ष यहाँ मेला भी लगता है।

नन्दिग्राम (भरतकुण्ड) (लगभग 14 किमी0)

अयोध्या - सुल्तानपुर मार्ग पर अवस्थित, मान्यतानुसार श्रीराम की वनवास से वापसी के लिए भरतजी ने यहाँ तपस्या की थी । तभी से इसका नाम नन्दिग्राम (भरत कुण्ड) पड़ा। यहाँ पिण्ड-दान की अत्यधिक मान्यता है। यहाँ भरतजी का मन्दिर भी है।

मखौड़ा (मखभूमि) (लगभग 27 किमी0)

मान्यता है कि यहाँ राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि-यज्ञ किया था ।

श्रृंगी ऋषि आश्रम (लगभग 32 किमी0)

फैज़ाबाद के मया बाजार-टाण्डा मार्ग पर महबूबगंज के सरयू नदी के तट पर स्थित श्रृंगी ऋषि का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ प्रतिवर्ष राम नवमी पर मेला लगता है ।

वाराही देवी (उत्तरी भवानी मन्दिर) (45 किमी0)

यहाँ वाराही देवी का प्राचीन मन्दिर है, जो उत्तरी भवानी के नाम से प्रसिद्ध है।

स्वामी नारायण मन्दिर, छपिया (55 किमी0)

छपिया स्वामी नारायण सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द जी की जन्म-स्थली है। यहाँ अवस्थित भव्य मन्दिर श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र है।

सूकर खेत (55 किमी0)

जनपद-गोण्डा में स्थित सूकर खेत में घाघरा एवं सरयू नदी के संगम स्थल पर पसका मेला लगता है। प्राचीन वाराह मन्दिर, गुरु नरहरिदास मन्दिर दर्शनीय हैं।

धोपाप (लगभग 70 किमी0)

लखनऊ - वाराणसी मार्ग पर लम्भुआ के पास गोमती नदी के तट पर स्थित यह स्थान पौराणिक कथाओं से जुड़ा रहा है। गंगा दशहरा एवं रामनवमी पर यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन होता है।

विजेथुआ महाबीरन (लगभग 80 किमी0)

सुल्तानपुर-वाराणसी मार्ग पर पौराणिक कथाओं से जुड़े इस स्थान पर मकरी कुण्ड, हत्याहरण तालाब, हनुमान जी का मन्दिर दर्शनीय है।

देवीपाटन (130 किमी0)

जनपद-बलरामपुर से 30 किमी0 की दूरी पर तुलसीपुर में स्थित देवीपाटन शक्तिपीठ अपने माहात्म्य के कारण प्रसिद्ध है।

श्रावस्ती (155 किमी0)

सुप्रसिद्ध बौद्ध स्थल, जहाँ भगवान बुद्ध ने अनेक वर्षा-काल व्यतीत किये थे।

कतरनियाघाट (160 किमी0)

उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय वन्य-जीव क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध स्थान है।

पर्यटन सूचनाएं

पहुँचने के साधन

अयोध्या एवं समीपवर्ती फैजाबाद रेल मार्ग एवं सड़क मार्ग द्वारा देश के सभी प्रमुख नगरों से भलीभाँति जुड़े हुए हैं।

समीपवर्ती हवाई अड्डे : अमौसी (लखनऊ-142 किमी0), बमरौली (इलाहाबाद-180 किमी0) तथा बाबतपुर (वाराणसी-200 किमी0)

आवासीय सुविधा

अयोध्या में ठहरने हेतु होटल व धर्मशालाएं उपलब्ध हैं, जिनकी विस्तृत जानकारी उ0प्र0 पर्यटन कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

उ0प्र0 राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित आवासीय इकाइयाँ-

- होटल साकेत, निकट-अयोध्या रेलवे स्टेशन,
  दूरभाष- 05278-232435
  ई-मेलः rahisaket@up-tourism.com
- यात्री निवास, नया घाट, दूरभाषः 05278-232435

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

❖ सहायक पर्यटक अधिकारी कार्यालय,
होटल साकेत, निकट रेलवे स्टेशन, अयोध्या।
दूरभाष : 05278-232435

❖ क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय (फैजाबाद मण्डल)
मकान नं0-1-3/152/4, पुष्पराज गेस्ट हाउस के निकट,
स्टेशन रोड, सिविल लाइन्स, फैजाबाद।

दूरभाषः 05278-223214
ई मेल : rtofzd@gmail.com